# रीतिकाव्यः काव्य की राष्ट्रीय चेतना में आधुनिक बोध

**डॉ. हेम लता**
**हिन्दी–व्याख्याता**
**राजकीय महाविद्यालय, हेली मण्डी (जाटौली)**
**गु:ग्राम (हरियाणा)**

**राष्ट्रीय कवियों में परिवर्तन की चेतनाः**

एक परिवर्तन के उपरान्त ही पुरातन का अवसान तथा नये युग का सूत्रपात होता है। रीतिकालीन राष्ट्रीय कवियों में राजनीतिक परिवर्तन की मांग सर्वत्र दिखाई पड़ती है। क्योंकि इस युग के कवि मुगलों के अत्याचार से तंग आकर वे अपने नामकों का गुणगान करते नजर आते हैं और उनके काव्य में जातीय स्फूर्ति के स्वर मिलते हैं। मान कवि का यह संदेश देखिए जिसमें देशभकित की अनेक वीरोचित गौरवमयी उक्तियां निहित है। स्वामी कार्य के लिए मरना श्रेयस्कर समझते हुए वीर सैनिक का कथन कितना मार्मिक है–

''साई काम सेवक मरें, तो तिन स्वर्गहि ठौर
सांई पेखैं संकरे, तिनहि नरम नहिं और।।''[1]

मान के काव्य में औरंगजेब में अत्यचार प्रतिकार मिला है और वह यही चाहता है कि इस अत्याचारी परिस्थिति का परिवर्तन हो, वह चाहता है कि देश स्वतन्त्र हो। इसलिए कवि ने वीर चरित्रों का वर्णन कर जाति से देश की स्वतन्त्रता एवं स्वाभिमान–रक्षा के लिए मरने–मिटने की प्रेरणा करना चाहता है, वह मृत्यु को तुच्छ समझने वाले वीरों के मुख से कहलवाता है–

''मनिधर ज्यों थिर थप्यि मनि, आप तापस सुप्रकाश।
चेजा करत सचेत चित, त्यों हम लख उल्हास।।[2]

भूषण औरंगजेब की हिन्दू विरोधी निति के विरूद्व विद्रोह करनेवाले नायकों में अग्रणी शिवाजी का गुणगान अपने काव्य में करते है। भूषण के ह्दय में देश और जाति के लिए दर्द था और वे शिवजी जैसे नयक को आदर्श मानकर सम्पूर्ण राष्ट्र में राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करना चाहते थे। भूषण

हिन्दू–मुस्लिम एकता के पक्षपात अकबर आदि की तो प्रशंसा करते है परन्तु इस नीति के विपरीत आचरण करने वाले औरंगजेब के प्रति घृणा प्रकट करने से नहीं चूकते।□

''बब्बर अकबर हुमाउुं हद्व बंधि गए।
हिन्दू और तुरक की कुश न वेद ढब की।।
और बादशाहन में हुति, चाह हिन्दुन की
जहांगीर शहजहां सखि पूरे तब की।
शिवाजी न होते तो सुनति होती सब की।।''[3]

इसी प्रकार सूदन जोधराज और चन्द्रशेखर की अत्याचारी शासन का अंत चाहते है। गुरू गोविन्द सिंह जी ने तो इस अत्याचारी शासन के अंत के लिए तलवार भी उठाई।

## राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक सक्रान्तिः–

रीतिकालीन राष्ट्रीय कवियों की पृष्ठभूमि में मुगलों और अंग्रेजों की मुस्लिम और पाश्चात्य संस्कृति का योगदान है। रीतिकाल की समय सीमा 1643ई. से 1857ई. तक मानी जाती है। इस समय अवधि के दौरान भारत पर मुगलों, पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों तीन अलग–अलग जातियों का साम्राज्य रहा है। यह बात भी ध्यान योग्य है कि इस काल में हिन्दू धर्म से सहिष्णुता रखने वाले मुगल सम्राटों का समय समाप्त हो गया था और औरंगजेब जैसे कट्टर और निरंकुश शासक का शासन प्रारम्भ हो गया था तथा बाद में 1600ई. में इग्लैंड की व्यापारिक कम्पनी 'ईस्ट इण्डिया' की स्थापना हो चुकी थी जो भारत पर अपना प्रभाव जमाती हुई देश को अपना साम्राज्य बना रही थी।

रीतिकालीन युग में स्त्रियों की दशा भी अच्छी नहीं थी। हिन्दी तथा मुसलमान दोनों सम्प्रदायों की स्त्रियों की पर्दा प्रथा प्रचलित थीं बेनी प्रवीण के काव्य में हिन्दुओं की पर्दा–प्रथा का वर्णन इस प्रकार मिलता है।

1. 'घूंघट को पट शीनउ तारि, गवंरि मैं नारि चहौं टक लाई।''[4]

बाल–विवाह की प्रथा भी समाज में प्रचलित थी। बाल्यावस्था में उनके मुखर हाव–भाव देखने के लिए मदिरापान कराये जाने का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

''ढीठ्यों दै बोलति हंसति पोढ़–विज्ञास अनोढ़।
त्यौ–त्यौं चलत न पिय नयन छकए छकी नवोद्।।''[5]

इस प्रकार 1857 ई. पूर्व ही संस्कृतिक आन्दोलनों ने सामाजिक क्रान्ति को बढ़ावा दिया। शिक्षा, अस्पृश्यता, वर्गभेद आदि परिवर्तन होने लगे।

## राष्ट्रीय चेतना और राजनैतिक सक्रान्तिः

अकबर के शासनकाल की सर्वांग पूर्णता, शक्ति और सुख समृद्वि के बाद शाहजहां के शासनकाल में पूर्वार्द्व तक भारत की राजनिति में सामान्यता शान्ति रही। किन्तु उसके बाद राजनीति विघटन के आसार बड़ी तीव्रता के साथ प्रकट होने लग गये। औरंगजेब के पूर्ववर्तियों ने धार्मिक सहिष्णुता बनाए रखने के लिए भरसक प्रयत्न किया था, किंतु औरंगजेब की धर्मान्धता एवं कट्टरता के साथ–साथ राज्य–विस्तार की लिप्सा ने पहले तो राजनीतिक दीवार में दरार डाली और फिर क्रमशः ये दरारे चौड़ी होती गयी।

भूषण कवि अपने समय की राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति सचेत या उसने सामयिक हलचलों को अपने काव्य का विषय बनाया है। अपने समय के सर्वोच्य सताधारी शासक पर उसने जो टिप्पणी की है, वह उसके निर्भीक व्यक्तित्व का परिचय देती है।

''भूषण सुकवि कहै सुनो नवरंगजेब।
ऐसे ही अनीति करि पातसाही पाई है।।''[6]

राजनीतिक दृष्टि से उस समय की जनता जागरूक नहीं थी। इस प्रकार से 'काउ नृप होउ हमहि का हानि। चेरि छाड़ि अब होब कि रानी'[7] वाली मनोवृति का परिचय दे रही थी।

केवल मुगल राजनीति ही नहीं बल्कि मराठों और सिखों की राजनीति के उत्थान–पतन भी इस युग में हुए। जन–सामान्य का शोषण बढ़ता गया और इन्हीं परिस्थितियों की परिणति हमें प्रथम स्वतन्त्रता संग्रांम के आन्दोलन में देखने को मिलती है।

## मूल भाषा के क्षेत्र में सक्रान्ति

रीतिकाल में निर्मित खड़ी बोली गद्य अधिकांशतः टीकाओं के अनुवाद के रूप में प्राप्त है। मौलिक रचनाएं अपेक्षाकृत कम है। प्राचीनतम खड़ी बोली गद्य के समान इस काल का भी खड़ी बोली गध ब्रज भाषा से और पूर्वी हिन्दी, पंजाबी, राजस्थानी, फारसी आदि भाषाओं में से किसी एक या अनेक से प्रभावित है परन्तु अब यह अपेक्षाकृत कम है। रामप्रसाद निरंजीन के नाम से प्रसिद्व 'भाषायोगवशिष्ट'

की भी भाषा 'बहुत साफ–सुथरी' या 'परमार्जित' नहीं है। जैसे हम इस ग्रन्थ के नवल किशोर प्रैस से प्रकाशित संस्करणों की भूमिका से, बंबई से सं. 1722 में प्रकाशित संस्करण से तथा ग्रन्थ की उपलब्धि हस्तलिखित पोथियों से प्रकट है, यह ग्रन्थ मूलतः पंजाबी ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोलियां बाद में इसे सुधारकर प्रकाशित किया गया है। ब्रजवासी दौलतराम जैन कृत 'भाषापदपुराण' अथवा 'पदपुराण' वचनिका राजस्थानी ब्रजभाषा प्रभावित खड़ी बोली में प्राकृत की जैन रामकथा का अनुवाद है। इस वचनिका में यज्ञ तत्रा टीकाशैली भी है। मल्तीनाम चरित्र वचनिका के रचियता इन्दौर वासी दौलतराम जैन थे। भगवान मल्लीनाम के जन्म वैराग्य ज्ञान तथा निर्वाण का विवरण प्रस्तुत करने वली इस वचनिका में जिसकी उपलब्ध प्रति तीस बृहत–पत्रों की है।

'गोरखनाथ के सताईस पदों का तिलक डॉ. बड़यवाल द्वारा गौरखवाणी, परिशिष्ट 3 में प्रकाशित किया गया है। इन टीकात्मक तथा अनुदित रचनाओं के अतिरिक्त रीतिकाल में मौलिक स्वतन्त्र गद्य भी पर्याप्त संख्या में निर्मित हुई।

## खड़ी बोली साहित्य

इस काल की ब्रज भाषा, फारसी, पंजाबी आदि से प्रभावित खड़ी बोली, गद्य की कुछ उल्लेखनीय मौलिक रचनाएं है–'एकादशी महिमा, सीधा रास्ता, फरूनिमा, हकीकत, नरहरिदास गौड़ की दवादैत, रानी केतकी की कहानी मंडोवर का वर्णन और परमात्मापुराण। ईसा की 19वीं सदी के प्रारम्भ में फोर्ट विलियम कालेज में भी खड़ी बोली गद्य में महत्वपूर्ण पुस्तकें का निर्माण हुआ है। उस कॉलेज से संबद्व व्यक्तियों द्वारा रचित कुछ ग्रन्थ है नासिकेतो व्याख्यान, रामचरित, प्रेम सागर, लाल चन्द्रिका, टीका, सिंहासन बतीसी, बैताल पच्चीस, भक्तमाल टीका का अनुवाद।

19वीं शती पूर्वार्ध की दो तीन रचनाएं गद्यरूपों के उद्भव की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उनमें एक है फोर्टविलियम कॉलेज के डब्लू. चैपरिलका सतीप्रथा पर लिखा लेख है। इस समय की अधिकतर रचनाओं की भाषा संस्कृत है। इसके कारण कहीं–कहीं भाषा निर्जीव हो गई है। रीतिकाल का खड़ी बोली गद्य प्रायः मिश्रित भाषा में है। समीपवर्ती भाषा और तत्कालीन प्रधान साहित्यभाषा ब्रज के सम्पर्क से मुक्त शुद्व खड़ी बोली 19वीं शती तक ब्रज, पूर्वी, राजस्थानी, पंजाबी या फारसी में से किसी एक या अनेक के सहारे ही चल सकी, स्वतन्त्र आत्मनिर्भर न हो सकी।

**निष्कर्षः–**

इस प्रकार यह माना जा सकता है कि रीति कालीन राष्ट्रीय काव्य में ही सामाजिक तथा राजनीतिक सक्रान्ति के आवश्यक तत्व विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होते है। यह युग सामाजिक तथा राजनीतिक आधार पर उथल–पुथल का युग था। राष्ट्रीय कवियों ने अत्याचारी शास्त्रों की काव्य में खुलकर भर्त्सना की तथा सता परिवर्तन की मांग की। इस परिवर्तन के साथ–साथ भाषा में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। क्योंकि मुस्लिम और हिन्दू संस्कृति नजदीक आने के कारण खड़ी बोली और उर्दू भाषा का परिष्कार होता है और इन दोनों भाषाओं का साहित्य हमें देखने को मिलता है। अन्त में यह माना जा सकता है कि रीतिकालीन राष्ट्रीय कवियों की चेतना ही आधुनिक राष्ट्रीय कवियों की बुनियाद है।

**संदर्भ**


1. मान–राजविलास, पृ. 110
2. मान–राजविलास, पृ. 183
3. सं. विश्वनाथ प्रताप मिश्र, भूषण ग्रन्थावली, पृ. 51
4. बेनीप्रवीण, नौरंग तरंग, छ. 388
5. जगन्नाथ रत्नाकर, बिहारी रत्नाकर, दो 19
6. सं. विश्वनाथ प्रतापमिश्र, भूषण ग्रन्थावली, छं. सं. 541
7. गो. तुलसीदास, रामचरितमानस (अयोध्याकांड), 3/161.